खमाज व ठुमरी का अन्तः संबंध

नीरा जैन

चढ़त रिखब न लगाइये, कोमल म-नी विराज।
ग नि वादि संवादी ते, कहियत राग खमाज।।

(राग चंद्रिकासार)

खमाज राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। इसमें निषाद् कोमल तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी गंधार संवादी निषाद है। इसके आरोह में रिषभ स्वर वर्जित किया जाता है। अर्थात् इसकी जाति षाड़व-संपूर्ण है। इस राग का गायन समय रात्री का दूसरा प्रहर माना जाता है। इसके आरोह में धैवत स्वर का विशेष महत्व नहीं है तथा अवरोह अनेक बार पंचम वक्र करके लगाया जाता है। आरोह में तीव्र निषाद ले सकते हैं। इस राग का वैचिंय ग, म, प, नि इन स्वरों पर अवलम्बित है एवं इन्हीं स्वरों पर अनेक तानें आकर समाप्त होती हैं। 1

खमाज नाम बहुत प्राचीन है। काम्बोजी थाट प्राचीन ग्रंथों में प्रसिद्ध है। इसी के स्वर समाज थाट में है। अतः इसका नाम खमाज इसी के आधार पर रख लिया। खमाज थाट का का आश्रय राग झिंझोटी है। झिंझोटी आश्रय राग होने पर भी थाट का नाम खमाज ही रखा गया है। कुछ का मानना है कि खमाज ''कांबोजी'' का अपभ्रंश रूप है और दूसरा मत है कि खमाज शब्द 'खम्बावती' का अपभ्रंश रूप है।2

किंतु खमाज एक प्राचीन तथा परंपरागत राग है। अस्तु अन्तोतगत्वा इसी राग को खमाज ठाट का आश्रय राग स्वीकारना ज्यादा उचित है। पं. भातरखण्डे जी के ग्रंथ (लक्ष्य संगीत) लिखने के बहुत पहले से ही सितार पर लिखी गयी कुछ पुस्तकों में खमाज ठाट का नाम मिलता है इसलिए खमाज ठाट का आश्रय राग खमाज ही माना जाना चाहिए इस राग में ठुमरी व टप्पा की सैंकड़ों बंदिशें भरी पड़ी हैं अस्तु खमाज राग को कई बार एक क्षुद्र अथवा छोटा राग बताकर कुछ कलाकार इस राग की महिमा को कम करके आँकते हैं। वास्तव मे ये उन रागों में से हैं जिसके अंदर हर प्रकार की मानवीय संवेदनाओं को प्रगट करने की क्षमता है।

इस राग में बड़ी तादार मे ठमरी, टप्पा, दादरा, गजल और भजन पाए जाते हैं। इसमें दोनों नि-ाद के प्रयोग से इसकी प्रकृति कुछ चंचल मालुम होती है। वस्तुतः इस राग के स्वर संवादों का विलम्बित प्रयोग गंभीरता तथा मध्य और द्रुत प्रयोग चंचलता का भाव उत्पन्न करता है। 3

उपशास्त्रीय संगीत की एक विधा है ठुमरी, जो कि श्रृंगारिक और चंचल प्रकृति की मानी जाती है। खमाज की प्रकृति भी ऐसी ही है और इसी लिए खमाज राग का प्रयोग ठुमरी, गजल, टप्पा, भजन, गीत, फिल्मी गीत आदि में हुआ है। ठुमरी पूर्णतया श्रृंगार रस की ही गायकी मानी जाती है। ठुमरी, गायकी की वह शैली है जिसमें भावों की सुगमता तथा सुकुमारता है। ठुमरी में गीत के शब्दों के भावों को बड़े ही सुन्दर ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाता है। ठुमरी अंग का गान केवल श्रृंगार रस का ही नहीं होता बल्कि इस गायन शैली में भक्ति, करूण, शांत आदि रसों की भी अभिव्यंजना होती है। 4

कालिदास के मालविकाग्निमित्र नामक नाटक में मालविका द्वारा छालिका का बड़ा ही सुंदर वर्णन किया गया है। ठुमरी इसका ही परिवर्तित रूप मानी जाती है। अंतर इतना है कि पहले आंगिक व वाचिक दोनों अभिनय होते थे, किंतु अब आंगिक अभिनय बंद हो गया है, केवल वाचिक अभिनय रह गया है अर्थात् केवल स्वरों के द्वारा गीत के बोल के भावों को अभिव्यक्त किया जाता है।

दूसरे मतानुसार मानसिंह तोमर ने ठुमरी को जन्म दिया। कुछ लोगों का कहना है कि ठुमरी का जन्म उन लोक गीतों से हुआ है जो कि नृत्य के साथ गाए जाते थे।

एक अन्य विचारधारा के अनुसार ठुमरी ख्याल से संबंधित है। 19वीं सदी के आरंभ में अवध के नवाब आसीफुद्दोला के दरबार में गुलाम रसूल गायक थे उनके पुत्र थे शौरी मियाँ। 5

उस समय जटिल और उलझी हुई तानों के साथ द्रुतख्याल गाया जाता था तथा गीत के ृाब्दों के भावों पर कम ध्यान दिया जाता था। शोरी मियाँ को यह अच्छा नहीं लगता था, इसीलिए उन्होनें ख्याल की जटिलता को समाप्त कर शब्दों को प्रधानता देकर एक नई शैली को जन्म दिया, जिसका नाम ''ठुमरी'' पडा।

प्रत्येक राग से किसी न किसी रस की अभिव्यक्ति होती है। ठुमरी कविता में निहित भावों को व्यक्त करती है। इसमें अनेक रसों का मिश्रण होता है यही कारण है कि यह अपने राग में सीमित न रहकर मेल खाते रागों के स्वरों को भी ग्रहण कर लेती है। ठुमरी का स्वभाव कोमलता है। इसमें चपलता, प्रेमपूर्ण विवाद आदि होते हैं। अगर इसको आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो स्त्री को ''मीरा'' या ''राधा'' और पुरूष को ''कृष्ण'' शब्द द्वारा इंगित किया जाता है। 6

रसों की दृष्टि से ठुमरी श्रृंगार और करूण रस पर ही आधारित होती है, किंतु शांत ओर भक्ति रस के भी गीत ठुमरी-शैली में गाए जाते हैं। ठुमरी मुख्यतः भैरवी, काफी, खमाज, तिलंग, गारा, पीलु, झिंझोटी, पहाड़ी आदि में गाई जाती है। 7

ठुमरी की गायकी का अपना वैशिष्ट्य है। यह रूपक संगीत का ही प्रारूप है। ठुमकी कैशिकी वृत्ति या रूमानी शैली की गायकी है। 8

आचार्य कैलास चन्द्र देव बृहस्पति के अनुसार ठुमरी का विषय नायिका के अंतर की असंख्य भाव-लहरियों का चित्रण है। इस प्रयोजन की सिद्धी के लिए कैशिकी वृत्ति का आश्रय लेकर जब स्वर, ताल, और मार्ग का प्रयोग किया जाता है, तब ठुमरी नामक गीत की सृष्टि होती है। स्वरों का भावानुकूल वैचिंमय प्रयोग ठुमरी का स्वर-पक्ष है, जिसके लिए बड़ी तमीज चाहिए। 9

खमाज अति प्राचीन राग है। खमाज राग में असंख्य व लोकप्रिय ठुमरियां पाई जाती है। यहां खमाज राग पर आधारित बहुत ही खूबसूरत व प्राचीन ठुमरियां दी जा रही है।

राग-खमाज, ठुमरी-कदरपिया

स्थाईः- पनिया भरन नहीं जाऊं आज, वो तो ठाड़ो है 'कदर' मोरी गई री लाज।
अंतराः- कर जोरत हूँ पइयाँ परत हूँ, काहूं की ना मानो सखि, उन को राज।

स्थाई

सा सा ग ग प नि या भ	ग मग मप ध र नऽ ऽन हीं	सानि धानि प ग जाऽ ऽऽ ऊँ आ	प मग-ग म ऽ जऽ ऽवो तो
प नी नी नी ठाडो है क	न (सां) नी धप्प द र ऽमो रीऽ	ध नी धप ग गई रीऽ ला	प मग ग सा ऽ जऽ ऽमैं तो
0	3	ग	2

अन्तरा

ग म ध नि कर जोऽ	सां नि सां ऽ र त हूं ऽ	प नि सारें पैं ऽ याँ प	संनि सां-नि धप रऽ तऽ हूँ ऽऽ
0	3	ग	2
म प मग का हू की न	ग म प ध मा नो स खी	सारें सांसां नीध उऽ नऽ को राऽ ज	प -प म ग ऽ जऽ मैं तो

राग खमाज ठुमरी त्रिताल

स्थाईः- मोरा बस कीना बाट चलत जिया पिया।

अंतराः- कैसे करूँ मोरी आली, डगर चलत मोरा मन हर लीना बाट चलत जिया पिया मोरा।

म गम
मो राऽ

प नी नी सां ब स की ना	-निसां रें सा नि ऽ बाऽ ऽट च	धप म म प लऽ त जि या	धप मप म गम पिऽ याऽ मो राऽ
नि सा ग म कै से क रूँ	प प नी नी मे री आ ली	प नी सां मं ऽ ग र च	मंगं सा नी नी लऽ त म न
प नी सां रें ह र ली ना	पनीसां रें सां नी ऽबाऽ ऽट च	धप गम प लऽ त जि या	धप मप म गम पिऽ याऽ मो राऽ
ग	2	0	3

11

राग-खमाज (बंदिश की ठुमरी) अद्धा त्रिताल

स्थाईः- सुनिये अरज हमारी साँवरो जीवन प्राण अधारे। जूही कहो, केवड़ा कहो, केतकी फूले है बाग मझारे।

अंतराः- भांती-भांती के फूल मनोहर सुभग सुगंध रारे। आप बिराजो ये छाई बिटप को कोमल चरण तुम्हारे। ब्यास अलि हाजिर हूँ प्यारे तोड ले आऊँ सारे हो।

स्थाई

-पनि नि- ऽ सुनि ये ऽ	-निसां-सां <u>नि</u>ध ऽ अर ऽज ऽऽ	प प पध (म) ऽ ह माऽ री	प- ध पध<u>नि</u>-धप साँऽ ऽव रोऽ ऽऽऽ
-पध (म) म ऽ जीऽ व न	-मग-सा रे ऽ प्राऽ ऽन अ	ग - - म धा ऽ ऽ ऽ	रेगपम गरेग - -सां रेऽऽऽ ऽऽऽ ऽ हो
- म - ग- -म ऽ जूऽ ऽही ऽक	प- - - हो ऽ ऽ ऽ	गम ध - ध<u>नि</u> केव ड़ा ऽ कहो	पधनिसां-<u>निनि</u> धप के ऽऽऽ ऽ तकी ऽऽ
- पध - म म ऽ फूऽ ऽले हैं	म ग -सारे बा ऽ ऽ गम	ग - - म झा ऽ ऽ ऽ	रेगपम गरेग - - (सा) रेऽऽऽ ऽऽऽऽ हो ऽ
- ग - ग ग - ऽ जीऽ ऽव नऽ	-रे<u>ग</u> सा रे ऽ ऽ प्राऽ ऽन अ	ग- - म धा ऽ ऽ ऽ	रेगपम गरेग - - (सा) रेऽऽऽ ऽऽऽऽ हो ऽ
0	3	ग	2

अन्तरा **<u>12</u>**

- ग ग म ऽ भाँ ति भाँ	प प नि - ऽ ति के ऽ	- नि नि सां ऽ फू ल म	ध निसरि- सां सां नो ऽऽऽऽ ह र
- पनि - नि नि ऽ सुभ ऽग सु	सं- नि सां गं ऽ ध न	- ध<u>नि</u> पधानिसां ऽ राऽ ऽऽऽऽ ऽ	<u>नि</u> ध<u>नि</u> धध - रे ऽऽ ऽऽऽऽ होऽ
- पध - सां रें ऽ आऽ ऽप बि	गं -गं- रा ऽ जो ऽ	सं सां- -रें मं ये छाँ ऽ ऽई बि	गंरे गं (सां) - टऽ प कोऽ
- नि - नि- नि ऽ कोऽ ऽम ल	नि सां निसां- च र नऽ ऽ	-धा<u>नि</u> -प धरें ऽ तुम्हा ऽऽ ऽऽ	<u>नि</u> ध<u>नि</u> धपध - प रे ऽऽ ऽऽऽऽ हो
- प - नि नि ऽ ब्या ऽ ऽस अ	नि - सां - ली ऽ हा ऽ	- निनि - सां निसां ऽ जिर ऽहूं ऽऽ	ध<u>नि</u> रेसां <u>नि</u>ध<u>नि</u> -प- प्या ऽऽऽ ऽऽऽ रेऽ
-प -- ध (म) म ऽ तोऽ ऽऽ ड़ ले	म ग सा रे आ ऽ ऊँ ऽ	ग - - म सा ऽऽ ऽ	रेगपम गरेम - (सा)- रे ऽऽऽ ऽऽऽ ऽ होऽ
- <u>ग</u> <u>ग</u> <u>ग</u> ऽ जी व न	प्रान अधारे - - -		
0	3	ग	2

<u>13</u>

सहायक संदर्भ -ग्रंथ-सूची

पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, क्रमिक पुस्तक मालिका भाग-2, पृ.सं.-122.

पं. विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे संगीत शास्त्र प्रथम भाग, पृ.सं.-223.

रागिनी मिश्र, राग विबोध : मिश्रबाणी, पृ.सं.-182-183.

कुमारी सुनीता द्विवेदी, ठुमरीः एक परिचयात्मक विवेचन लेख, संगीत जनवरी 2003, पृ. सं.-18.

वही, पृ.सं.-19.

वही, पृ.सं.-20.

वही, पृ.सं.-21.

ठाकुर जयदेव सिंह, ठुमरी संग्रह-भाग-2, पृ.सं.-4.

मदन लाल व्यास , ठुमरी चमकदार और वैचिंयपूर्ण परम्परा, संगीत, जनवरी 2003, पृ.सं.-37.

गंगाधर राव तेलंग, ठुमरी संग्रह, भाग-2, 1977, पृ.सं.-7.

वही, पृ.सं.-13.

पं.तुलसीराम देवांगन, संगीत संजीवनी, प्रथम संस्करण 1907, भाग-1, पृ.सं. -11.

वही, पृ.सं.-12.